


Brahmakrita Vishnu Stutih

——
ब्रह्मकृता विष्णुस्तुतिः

——
Document Information



Text title : Brahmakrita Vishnustutih
File name : brahmAKRRitAvisHnustutiH.itx
Category : vishhnu, stuti, vishnu
Location : doc_vishhnu
Author : agastya, Hindi - Pandit Bhavanath Jha
Transliterated by : P. Sudarshana
Proofread by : P. Sudarshana
Acknowledge-Permission: Bhavnath Jha
Latest update : December 22, 2023
Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 22, 2023

sanskritdocuments.org



Brahmakrita Vishnu Stutih

ब्रह्मसूक्ता विष्णुस्तुतिः



(अगस्त्यसंछिता अध्याय ४)

पूर्व ब्रह्मा तपस्तेपे कल्पकोटिशतत्रयम् ।

मुनीन्द्रैर्बहुभिः साह्यं दुर्धर्षानशनप्रतम् ॥ ४ ॥

प्राचीन समय में ब्रह्माजी ने तीन सौ करोड़ वर्ष तक निराहार रहकर बहुत सारे मुनिश्रेष्ठ के साथ तपस्या की ।

पुरस्कृत्याग्निमध्यस्थस्तदाराधनतत्परः ।

आदरातिशयेनास्य नैरन्तर्यार्थनादिना ॥ ५ ॥

अग्नि के मध्य में रहकर और श्रीराम को समक्ष में रखकर आदरपूर्वक लगातार पूजा-अर्चना करते हुआ वे आराधना करते रहे ।

शिराय देवदेवोऽपि प्रत्यक्षमभवत्तदा ।

किञ्च पुण्यातिरेकेण सर्वेषां तस्य य प्रिये ॥ ६ ॥

बहुत दिनों के बाद पुण्य की वृद्धि के कारण ब्रह्मा तथा अन्य सभी मुनियों के सामने देवों के स्वामी भगवान् श्रीराम प्रकट हुआ ।

नवनीलाम्बुदश्यामः सर्वाभरणभूषितः ।

शङ्खचक्रगदापद्मजटामुकुटशोभितः ॥ ७ ॥

भगवान् श्रीराम नवीन अर्ध नीले मेघ के समान श्यामल वर्ण के थे, उनके शरीर पर सभी गहने शोभित हो रहे थे तथा शङ्ख, चक्र गदा, कमल, जटा और मुकुट से वे सुशोभित थे । कल्प भेद से स्वयं भगवान् श्रीराम श्रीब्रह्मा जी को यतुर्भुज रूप में अपने षडक्षर मन्त्र से दीक्षित करते हैं “कल्पान्तरे तु रामो वै ब्रह्मणो दत्तवानिमम्” ।

किरीटछारकेयूररत्नकुण्डलमण्डितः ।

सन्तप्तकाञ्चनप्रभ्यपीतवासोयुगावृतः ॥ ८ ॥

मुकुट, छार, बाजूबन्द, रत्न के कुण्डल से वे विभूषित थे और तपे हुआ सोने के समान पीले रङ्ग के जोड़े वस्त्र उनके शरीर पर थे ।

तेजोमयः सोमसूर्यविद्युद्दृक्काग्निकोटयः ।

भिलित्वाविर्भवन्तीव प्रादुरासीत्युरः प्रभुः ॥ ९ ॥

भगवान् एष प्रकार सामने प्रकट हुये, जैसे करोड़ों यन्द्रमा, सूर्य, बिजली, उल्का और अग्नि एक साथ मिलकर प्रकट हुये हों ।

स्तम्भीभूय तदा ब्रह्मा क्षणं तस्थौ विमोहितः ।

तुष्टाव मुनिभिः सार्द्धं प्रणम्य य पुनः पुनः ॥ १० ॥

कुछ देर तक तो ब्रह्मा धबराकर ખમ્भे की तरह ढिंढक गये । पुनः मुनियों के साथ बार-बार श्रीराम के प्रणाम कर स्तुति करने लगे ।

ब्रह्मोवाच ।

धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि कृतार्थोऽस्मीह बन्धुभिः ।

प्रसन्नोऽसीह भगवन् श्रुतं सकलं मम ॥ ११ ॥

हे भगवन्! आज मैं अपने बन्धुओं के साथ धन्य हो गया; आज मेरे सभी कार्य सम्पन्न हो गये । हे भगवन्! आप मेरे उपर प्रसन्न हैं, इससे मेरा श्रुवन सकल हो गया ।

कथं स्तोष्यामि देवेश भगवन्निति चिन्तयन् ।

ऋयजुःसामवेदैश्च शास्त्रैर्बहुभिरादरात् ॥ १२ ॥

साङ्गैर्भवादिभिर्धर्मप्रतिपादनतत्परैः ।

तुष्टावेश्वरमभ्यर्च्य सन्तुष्टो मुनिभिः सह ॥ १३ ॥

हे देवेश! मैं कैसे आपकी स्तुति करूँगा, यह सोचते हुये मुनियों के साथ सन्तुष्ट होकर ब्रह्मा ने वेदाङ्ग सहित ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अन्य अनेक शास्त्र, मनुस्मृति आदि धर्म को बजानने वाले शास्त्रों से भगवान् श्रीराम की अर्चना कर उनकी स्तुति की ।

त्वमेव विश्वतश्चक्षुर्विश्वतोभुज उच्यसे ।

विश्वतोबाहुरेकः सन् विश्वतः स्यात्तथा परः ॥ १४ ॥

जनयन् भूर्भुवर्लोकौ स्वर्लोकं सर्वशासकः ।

अक्षिभ्यामपि बाहुभ्यां कर्णभ्यां भुवनत्रयम् ॥ १५ ॥

पटुभ्यां य नासिकाभ्यां य सर्वं सर्वत्र पश्यसि ।

समाधत्से शृणोष्येतत् सर्वं गच्छसि सर्वकृत् ॥ १६ ॥

जिघ्रस्येवं न ते किञ्चिद्विज्ञातं प्रभोस्त्विल ।

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च त्वमेव ननु केशवः ॥ १७ ॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।

पृथिव्यमेजसां रुपं मरुटाकाशयोरपि ॥ १८ ॥

कार्यं कर्ता कृतिर्देव कारुणं देवलं परम् ।

अणोरणीयान् महतो महीयान् मध्यतः स्वयम् ॥ १९ ॥

मध्योऽसि निर्विकल्पोऽसि कस्त्वां देवावगच्छति ।

हे श्रीराम! आपके नेत्र सभी दिशाओं में हैं; आपके मुख भी सभी दिशाओं में हैं तथा आपकी बाहें भी सभी ओर फैली हुई हैं, फिर भी आप संसार से परे हैं । आप दोनों आँवों, बाहुओं और कानों, पैरों और नासिकाओं से भूलोक, भुवर्लोक, और स्वर्गलोक इन तीनों को उत्पन्न कर सब पर शासन करते हैं, सभी जगहों पर सब कुछ दैत-सूँघते हैं; सब कुछ सुनकर उनका समाधान करते हैं और सारे कार्य करते हैं । हे रघुनन्दन! असा कुछ भी नहीं, जिसे आप जानते नहीं । आप ही से ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र प्रकट होते हैं तथा केशव रूप में भी आप ही हैं । वेदपुरुष रूप में आपके लज्जों शिर हैं, लज्जों नेत्र हैं तथा लज्जों पैर हैं । हे देव!, पृथ्वी, जल, अग्नि के तथा मरुत् और आकाश स्वरूप आप हैं । आप ही करने योग्य, करनेवाले, किये गये पदार्थ तथा किया के परम साधन भी आप ही हैं । हे देव! आप अणु से भी सूक्ष्म और मलत् (महाविष्णु) से भी महान् हैं, जैसा की सुदर्शन संहिता में कहा गया है, “राघवस्य गुणो दियो महाविष्णुः स्वरूपवान्” और उनके बीच में भी आप ही हैं; आपका विकल्प कोह नहीं है; आपको भला कौन जान सकता है?

अेवमेवादिबहुस्तोत्रैस्तुतः स परमेश्वरः ॥ २० ॥

वैदिकैः कृपया विष्णुर्ब्रह्माणमिदमब्रवीत् ।

स्तुतस्तुष्टोऽस्मि ते ब्रह्मन् उग्रेण तपसाधुना ॥ २१ ॥

इस प्रकार के वेदोक्त स्तोत्रों से जब ब्रह्मा ने भगवान् की स्तुति की, तब उन व्यापक श्रीराम ने ब्रह्माण से कहा- हे ब्रह्मा! मैं आपकी स्तुति और उग्र तपस्या से अब सन्तुष्ट हूँ ।

इत्यगस्त्यसंहितायां परमरुद्रस्ये ब्रह्मण्यस्तुतिः समाप्ता ।

As an observation, there is no mention of rAma in the text, although addressed such in the translation. This text is followed by Shri Vishnu giving rAmAya namaH mantra to brahmA (see rAmaShaDakSharamantropadeshaH) for the benefits of the mankind . While delivering, he mentioned himself as Rama, which is the reason the translation includes reference to Shriram.

Encoded and proofread by P. Sudarshana

Hindi translation by Pandit Bhavanath Jha

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

